दीपों का त्योहार - दीवाली

अँधियारों को दूर भगाती,
खुशियों के दीप जलाती है।
रूठे चेहरों पर मुस्कानें,
दीवाली लेकर आती है।

आँगन-आँगन रंगोली है,
हर घर में उजियारा है।
नन्हे-नन्हे दीपों ने भी,
रात को खूब सँवारा है।

मिट्टी के दीपों की लौ में,
एक सुनहरा संदेश है।
प्रेम, दया और भाईचारे का,
इस त्योहार में विशेष है।

नफ़रत के अँधियारे मिटें,
हर दिल में प्यार का दीप जले।
कोई भूखा न सोए जग में,
हर घर में खुशियों के फूल खिलें।

आओ मिलकर कसम ये खाएँ,
सबके जीवन में प्रकाश लाएँ।
सच्चाई की राह पर चलकर,
भारत को स्वर्ग बनाएँ।

दीपों का यह पर्व सुहाना,
सबके जीवन में खुशियाँ लाए।
प्रेम और सद्भाव का संदेश,
हर दिल तक पहुँचाए।



झरना मुखर्जी
वाराणसी

भैय्या दूज की मंगल कामनाएं



दीवाली के दीप जल उठे,
मिटा निशा का अँधियारा !!
भैय्या दूज का यह शुभ दिन ,
अब देखो आया कितना प्यारा,
पायल की मधु झंकार कर रही ,
आपके सुखी जीवन की कामना,
विनोद प्रिय हो सब का मन
दिल में लेकर प्रीत भावना
वसुधा मुख पे सज रही मुस्कान
भाल पे सुशोभित खुश्बू चन्दन ,
वन्दित हैं विधि नाम जाप से
ब्रह्मा विष्णु वरुण देवगण ,

सुख वैभव से जीवन है अंकित
ज्यों नभ में चमके स्वाति तारा,
विधिना का सुख हर पल हो
व्यापक,
नित नवीन खुशी से घर भरा हो
सारा ,

मधुर याद आती है सबकी,
जब आता ऐसा शुभ दिन
त्यौहार,
बहना की बस यही कामना,
यह शुभ दिन लाये खुशी की
बहार ,

जय प्रकाश भाटिया
लुधियाना

हाइकु



1)भुलाओ नहीं
माँ का आशीर्वाद है
किस्मत देता
2)भौरा चूमता
रंग बिरंगे फूल
मस्त बहार
3)तेरा मिलना
जैसे मिले बहार
मारूथल में
4)सात सागर
नारी बीच बहता
बहता पानी
5)रात अंधेरी
चानण देता रहा
जग जुगनी
6)याद उसकी
पल पल सताती
कभी ना जाती
7)लड़की होती
घर बीच कली है
खुशबू देती
8)माँ का आँगन
लड़की तितली है
फूलों के संग
9)घाटी सो रही
बर्फ उड़ गई है
भाप बनके
10)धूप दौड़ती
खरगोश तरह
हाथ ना आती

कश्मीरी लाल चावला संपादक
अदबी माला मुकतसर 152026
पंजाब 9814814791

ग़ज़ल

लफ़्ज़ के फूल? दब रह गये
बन्द के बन्द लब रह गये

वक्त के साथ बदले सनम
वो न पहले से अब रह गये

सबहदफ़ कीतरफ गामजन
हम यहाँ बे सबब रह गये

सीख अपने बड़ों से न ली
बस वही से अदब रह गये

सामने से जो पर्दा हटा
देखते सब के सब रह गये

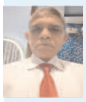

हमीद कानपुरी
मीरपुर कैण्ट
कानपुर- 208004

जीवन में भैया तेरा साथ रहे



हम एक दूजे के लिए सदा खास रहे
हम एक दूजे पे भैया पूर्ण विश्वास रखें
जब तलक गंगा यमुना जी में पानी बहे
मेरे भैया तेरी जिंदगानी रहे
तेरा मान बढ़े सम्मान बढे
प्रतिपल तेरे होठों की मुस्कान बढ़े
भाई बहन के प्रेम का यह त्योहार
अनुपम और महान बने
तू खुश रहे सदा यही मेरा मन चाहे
हम दूर भले रहे साल भर एक दूसरे से
मगर आज के दिन हम जरुर मिले
मेरी उम्मीदों का तू मान रखें
मेरी आशाओं का सम्मान करें
मैं तेरी राह तकूंगी तब तलक
जब तक ये जमीं व आसमान रहे
तेरी मेरी जोड़ी सुंदर और सलोनी
भाई दूज का पावन पर्व रिश्तों में
उल्लास भरे
सदा तू मेरे पास रहे... !!
हैप्पी भाई दूज

किरण काजल बेंगलुरु

खुशी उजाला

गड़बड़ गीत सुनेगा लाला ,
जिसने देखा नहीं उजाला।
सच की राह चुनो हरदम जी ,
दिल होता झूठों का काला।
सुख मिलता है उसे सदा ही ,
जिसने मन में दुख को पाला।
हार मिले तो दुख होता है ,
जीत मिले तो मिलती माला।
रात चांदनी जब भी आती ,
देती है वो खुशी उजाला।

महेंद्र कुमार वर्मा
भोपाल मो 9893836328

आलोकित जीवन



दीप जलाऊँ आँगन-आँगन,
उजियारा फैले अंतर्मन।
ज्योति पुंज से तिमिर मिटाऊँ ,
करूँ सदा आलोकित जीवन।।

पथ बैठे जो अश्रु बहाते,
भाग्य कोसते मन पछताते।
तमस निराशा उन्हें छू ना,
उजला कर दूँ उनका दामन।।

रिश्तों पर जो धूल चढ़ी है,
द्वेष भावना सतत बढ़ी है।
मानवता के पाठ सिखाऊँ,
अमर रहेगा तब अपनापन।।

दीवाली का पुण्य पर्व है,
हम हिन्दू हैं हमें गर्व है।
हिंसा का हो पूर्ण विसर्जन,
जन के मन हो प्रेम समर्पण।।
प्रभु से मेरा यही निवेदन,
मिले प्रेरणा यह मनभावन।
कर्म करूँ मैं ऐसा पावन,
दीप जलाऊँ आँगन-आँगन।।

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
राजिम

मुक्तक

दिन गुज़र जाएगा और रात हो जाएगी
बिन कहे बिन सुने हर बात हो जाएगी
लाख पहरे बिठाए हम पे जमाना मगर
ख्वाबो ख्यालों में मुलाकात हो जाएगी

डॉ पुनीत कुमारमुरादाबाद
244001

आंखों ने मोहब्बत का पैगाम दिया है

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
आंखों ने मोहब्बत का पैगाम दिया है
हमने तो यह दिल तुम्हें ईनाम दिया है।

कुछ बातें मोहब्बत की
हम रोज करते है।
इन बातों से कभी
न दिल भरते हैं।

हमने तो यह दिल तेरे नाम किया है ..।

आंखों ने मोहब्बत का पैगाम दिया है
हमने तो यह दिल तुम्हें ईनाम दिया है।

तुम हमपर मरती हो
मरती ही रहोगी ।
प्यार हमीं से
बस करती रहोगी।

हमने तो तुमपर ऐतबार किया है..।

आंखों ने मोहब्बत का पैगाम दिया है
हमने तो यह दिल तुम्हें ईनाम दिया है।

अब प्यार की मंजिल
हमें मिल गई है।
अरमानों की दुनिया
मेरी खिल गई है ।

हाथों में तेरा हाथ हमने थाम लिया है. ।

आंखों ने मोहब्बत का पैगाम दिया है
हमने तो यह दिल तुम्हें ईनाम दिया है।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
गल्ला मंडी गोलाबाजार 273408
गोरखपुर उ.प्र.

परचम



इश्क़ के परचम लहराने लगे हैं,
ख़्वाब तेरे आँखों में आने लगे हैं।

तुम आए जो सूरज की तरह ज़िंदगी में,
हम भी सूरजमुखी से मुस्काने लगे हैं।

ऐसा न किसी का कभी हो हाल ख़ुदाया,
हर आहट पे हम ख़ुद को सजाने लगे हैं।

आलम ये जवानी का है उस हुस्न पे तारी,
दरिया कई सागर में समाने लगे हैं।

इस क़दर बहा दी है हवाओं में मय-ए-इश्क़,
अब फूल भी भौंरों को लुभाने लगे हैं।

इतनी सी ख़ता थी कि क्यों ग़म हुआ हमसे,
अपने भी हमें अब तो रुलाने लगे हैं।

यादों का ज़ख़ीरा जो रखा है मिरे आगे,
हर रोज़ भुलाने में ज़माने लगे हैं।

शीशे जो बिखर भी गए तो क्या हुआ आख़िर,
हर टुकड़े से अब 'अक्स' वो मुस्कुराने लगे हैं।

नितिन पुरोहित उज्जैन अक्स

आना मेरे गाँव

नहीं कहता हूँ मैं अब किसी से,
कि आना मेरे गाँव,
नहीं सुनाई देती मुंडेरों पर,
अब कौए की वह काँव-काँव !

नहीं बुलाता हूँ मैं अब,
त्योहारों पर मेहमान,
सभी पहलवान भूल गए हैं,
अखाड़े के वे दाँव !

बहुत शर्म आती है मुझको,
अब कोई नहीं पीता दूध,
दूध की जगह शराब ने ली,
पीकर चलते उल्टे पाँव !

नहीं खेलते डुड़िया पीपर तले,
वे नन्हे-नन्हे पाँव,
नहीं सुहाती अब पहले जैसी,
बरगद की शीतल छाँव !

रिश्ते-नाते सिमट गए हैं,
अब मतलब के दायरे में,
नहीं आतीं भौजाई की भौजाई,
साले की साली, सरहज की भौजाई,
नहीं झुकते अब भैया के पाँव !

नहीं रहा अब मेरा पहले वाला गाँव,
किस्से-कहानियाँ, सारंगा-शहनाई,
अलाव तापते शंभू काका वाला ठाँव,
नहीं पूछता अब कोई,
पानी भरने जाऊँ तो, कहाँ से आऊँ !

नहीं रहा अब वह अपनापन,
नहीं रही वह पुरानी छाँव,
दिल आज भी पुकार रहा है,
लौट आओ मेरे गाँव !

डॉ. सतीश 'बब्बा'
पोस्ट= कोबरा, जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, मोबाइल - 9451048508,

आत्मा मरती है

वैसे तो आत्मा मरती नहीं,
उसके अपने मार गए।
एक मरा हुआ कब तक,
जीवन की अभिनय करता,
बाद वो हार गए।
हार गए मैं क्यूं कहूं,
अटल असत्य मिथ्या होगा।
बातों से सिखाया नहीं,
कर्तव्य कर दिखा गए।
अग्रज कैसा हो,
दर्पण नहीं, जीवन का सार पढ़ा गए।
एक वक्त था, सब फटा ही था,
कुर्ता हो या एड़ी।
सर पर बोझा भी लदी,
चाहे नहीं हो पेट में रोटी।
आधी रात को सोया,
जग गया भोर में।
कभी गेहूं कभी मकई,
नंगे पैर लेवा लगाया खेत में।
काट पीट धर देहरी संभाला भी।
तब कर्म में कोई साझा नहीं,
परिश्रम कोई बांटा नहीं।
बस बाटी सब मन,
और ढाह दिया डगमगाते चिरागों का
छत....।
वो गए कहां है? हैं
उनसे मिले गीता के ज्ञान में,
रामायण के गान में,
जीवन के हर रंग में,
खिलखिलाती सुबह - दोपहर,
मुस्काती शाम में।
पेड़ों की डालियों में,
खेत जाती गलियों में,
गांव की पगडंडियों में,
अभी है।
मन के अरमानों में,
अधरो के अल्पांकुरित मुस्कानों में।
वही अनाज की डेहरी में,
स्पर्श हिन, अनुभवों के प्रहरी में।
वो हैं।
स्वयज्ञ का अभिमान नहीं है,
लघु त्रुटि का दे ज्ञान नहीं है।
स्वनुज की पहचान नहीं है,
कब आओगे! पूछे, भान नहीं है।
मैं तन्या,स्वनुजा हुई पराई है,
थे, किए विदाई है।
थे,किए विदाई हैं।
विह्वल मन ढांढस दे मना लिया
वे हैं नहीं।
वे हैं नहीं।
ये मान लिया।
अब मां में समाहित दृश्य पापा की
परछाई.....है
पूज्य पिताजी को श्रद्धांजलि



गुडिया तिवारी
गोपालगंज सिवान
बिहार

प्रकृति



शीतलता चांद सी
उष्णता सूरज सी

टिमटिमाहट तारों सी
व्यापकता हवा सी
क्या बना सकता है कोई?

अनमोल रचना है प्रकृति की
पाओ लाभ मुफ्त की

फैलाओ खुब गंदगी
मन करे जितनी
रोकेगा भी क्यों कोई?

लहू बहे, वही बस जंग नहीं
नियमों का पालन नहीं, जंग हीं

समझ कहां नुकसान की
बस एक धुन है भोग लेने की
इस जंग की बात कब होगी?

शीतलता लाओ चांद सी
उष्णता सूरज सी

बह चलो नदियों सी
खिलते रहो फूलों सी
प्रकृति का कर्ज तभी चुकेगी

सारा जंग तभी रूकेगी
सारा जंग तभी रूकेगी..

राजीव, गाजियाबाद 8882712814

उर्जोसोत्सव

जगमगाता प्यारा-सा त्योहार,
खुशियों से महके हर घर-परिवार,
बुराई पर अच्छाई की जीत का उपहार,
दीपों की आभा से दमके सारा संसार!
नए-नए परिधान पहनकर,
मुस्कान सजाए हर घर-आँगन,
मिठाइयों की खुशबू, पकवानों की बहार,
पूजा-अर्चना से गूँजे हर द्वार!
सबसे अनूठा, प्रसिद्ध त्योहारों में एक,
अंधकार पर प्रकाश की विजय का संदेश,
माँ लक्ष्मी के आगमन से खिल उठे हर परिवेश,
कितना सुंदर, कितना प्यारा है हमारा देश!
आओ मनाएँ दिवाली, संकल्प यही रहे,
प्रदूषण का अंश भी आसपास न रहे,
अपनी और सबकी ज़िंदगी में खुशियों के दीप जलाएँ,
प्रेम, सद्भाव और उजास से हर कोना सजाएँ!



डॉ. माधवी बोरसे सिंह इंडा अंतरराष्ट्रीय बहुभाषी प्रशिक्षक कोटा, राजस्थान

भाई दूज दीवाली की

धनतेरस से शुरू दीवाली
भाई दूज तक चलती है ।
धनतेरस दीवाली गोवर्धन
पूजा भाई दूज तक चलती है ।

गई दीपावली भाई दूज आई ।
भाई बहन की खुशियां आई ।
गोवर्धन की पूजा के वाद में
भाई दूज की खुशियां मनाई ।

दीपावली के दूसरे दिन
को भाई दूज मनाते है ।
भाई बहन के स्नेह प्यार
का बंधन इसको कहते है ।

कच्चा धागा पक्का बंधन
भाई को बांधती अपनी बहन ।
भाई बहन के रक्षा सूत्र के
सबसे पवित्र होते है बंधन ।

भाई बड़ा हो या छोटा है
जीवन भर रिश्ते चलते हैं ।
बहन की रक्षा हमेशा करता ।
भाई वो वादे ,को निभाते हैं ।

भाई दूज के दिन भाई
बहन के घर में जाता है
भाई बहन का ऐसा रिश्ता
अपने घर भी बुलाता है।

बहन से रक्षा सूत्र बंधवाता ।
भाई बहन का पवित्र ये रिश्ता ।
जीवन भर ये हमेशा चलता
प्यारा भाई बहन, का रिश्ता ।



डा अनन्तराम
चौबे जबलपुर

आओ अब, मेरे श्री राम



रात अमावस, है वीराना, तम से है,
इसका याराना, पर मेरा मन,
कभी ना हारा,
दीवाली दीपित, जग सारा,

ज्योति का है, विस्तृत आयाम।
आओ अब ,मेरे श्री राम।।

संकट के बादल,फिर आते,
फिर भी वीर,नहीं घबराते,
रिपु को सदा, चुनौती देते,
रण में जीते, या मर जाते,

बनी रहे, यह रीति तमाम।
आओ अब, मेरे श्री राम।।

झुठ-कपट फहराते परचम,
न्याय-धर्म पीड़ित हैं हरदम,
सच्चाई दिखती है निष्फल,
सभी ओर फैला केवल छल,

करूँ निवेदन,छोड़ो धाम।
आओ अब, मेरे श्री राम।।

डॉ. मधुर बिहारी गोस्वामी

दीवाली आई

दीप जले दीवाली आई।
हर घर देखो खुशियाँ लाई।।
घर आँगन की हुई सफाई।
खुश हैं सारे बहना-भाई।।
चमक उठा घर अपना सारा।
आज सभी ने इसे निहारा।।
नये वस्त्र भी सबने पहने।
और साथ में पहने गहने।।
बेला पूजन की जब आई।
सबके मन में खुशियाँ छाई।।
सबने खूब मिठाई खाई।
दी आपस में खूब बधाई।।
गाँव शहर में देखो जगमगा।
दीप जल रहे देखो पग-पग।।
आओ हम भी खुशी मनाएँ।
घर-घर अपने दीप जलाएँ।।

पारस चन्द जैन, देवली जिला टोंक (राज.)

पुरखे गे गलाई...



इक्क सुनेहड़ा देई जांदी संझा दी घरूंदी धुप्प।
जो चड़ेया सो पड़ेया मितरा नित नी रैंदी दुक्क।।

अपणी करणी अप्प भरणी इतणी देई एह् गल्ल।
लोकां दा काम्म कंडे राह्ब तैं चुकणे तां चुक्क।।

अपणी ठींगी अप्प ई खांदी पुरखे गे गलाई।
झुकणे आले कदी नी टुटदे जितणा हवै झुक्क।।

एह् दुनिया कमां दी खेती जे बाह्ब सै लुणना।
खरा कमाणा आज्ज कमाई लै बुरा कमदि रुक्क।।

अधी दुनिया जकड़ी दी ऐ नेहरे दियां जंजीरां।
अखरां दे तू दीए जाली सब जंजीरां टुक्क।।

सरे सपड़े पेस नी कोई गल्ल एह् बड़ी सयाणी।
अंबरे प थुकणा अप्प प पौंदा अंबरे पुर मत थुक्क।।

राम रावण दा हर मानस च चलदा रैंह्दा युद्ध।
जे राम जताणे मितरा तां अंदरे दा रावण फुक्क।।

अशोक दर्द
डलहौजी चंबा हिमाचल प्रदेश

तेरे बिना ही मेरी हर दिवाली होगी

मैं जानता हूँ, तेरे बिना ही मेरी हर दिवाली होगी,
रोशनी तो होगी मगर, ज़िंदगी खाली-खाली होगी...!



दीये तो जलेंगे आँगन में, खुशियाँ भी आएँगी,
पर तेरी कमी हर पल मुझे अंदर से सताएगी।

लोग कहेंगे– 'देखो, कितनी रोशन है रात, '
मगर मेरे दिल में होगी बस तेरी यादों की बरसात।

इस बार भी मुस्कुराने की कोशिश करूँगा मैं,
पर सच कहूँ... तेरे बिना हर खुशी अधूरी होगी।

मैं जानता हूँ, तेरे बिना ही मेरी हर दिवाली होगी,
मेरी ज़िंदगी में रोशनी होगी... मगर रूह खाली-खाली होगी...!

दीपक झा वत्स नाादा बेनीपुर दरभंगा बिहार

गांव की दिवाली



एक दियां खेत में,
एक दियां खलियान में,
एक दियां बगीचे में,
एक दियां खान में।

एक दियां थान पर,
एक दियां पवान पर,
एक दियां मेड़ पर,
एक दियां पेड़ पर।

एक दियां कोठरी में,
एक दियां झोपड़ी में,
एक दियां गौंखे पर,
एक दियां हैदें पर।

एक दियां सीढ़ी पर,
एक दियां डेढ़ी पर,
एक दियां खाट पर,
एक दियां माच पर।

एक दियां चूल्हे में,
एक दियां चौके में,
एक दियां आंगन में,
एक दियां छावन में।

एक दियां कुएं पर,
एक दियां छूहे पर,
एक दियां बाड़े पर,
एक दियां किवाड़े पर।

एक दियां मन्दिर में,
एक दियां दुकान में,
एक दियां गमले में,
एक दियां दालान में।

एक दियां नाली पर,
एक दियां नल पर,
एक दियां टाली पर,
एक दियां हल पर।

कुछ दियां छत पर,
कुछ दियां खिड़की पर,
कुछ दियां मोहर पर,
सात दियां द्वार पर।

नहीं छूटता है कोई कोना,
हर कोना हो जाता है सलोना।
ऐसी होती है गांव की दिवाली,
हर तरफ जहां फैली
खुशहाली।

पटाखों की फटफट,
आती है चारों तरफ।
रंग बिरंगी चमकीले झालर,
कर लेते है सब को कायल।
पूजे जाते हैं लक्ष्मी गणेश,
हर घर होता आज इनका
प्रवेश।
हर दिवाली लाये खुशहाली,
आप सभी को शुभ
दीपावली।

शिवमणि 'सफर
'(विकास)

गोवर्धन पूजा

ब्रज की पावन भूमि में, गोकुल नामक गाँव।
इस पावन ब्रज भूमि पर, कान्हा की थी छाँव।
देवराज ब्रजभूमि से, लेते अनुचित लाभ-
कान्हा ने फिर चल दिया, एक सुनहरा दाँव।।1।।

गोकुलवासी इन्द्र का, करते थे गुणगान।
पूजन करते साथ में, देते थे पकवान।
इसी प्रथा को तोड़ने, की कान्हा को चाह-
ठान लिया श्री कृष्ण ने, तोड़ेंगे अभिमान।।2।।

कान्हा ने सबसे कहा, पूजन करो पहाड़।
फल सब्जी के साथ में, देता हमको झाड़।
गोवर्धन के साथ में, पूजो सब गौ मात-
इन्द्रदेव ने कुपित हो, ठानी करूँ बिगाड़।।3।।

सात दिवस करते रहे, देवराज उत्पात।
लगातार करते रहे, बादल तब बरसात।
उठा लिया श्रीकृष्ण ने, गोवर्धन गिरिराज-
हार गए श्रीकृष्ण से, तब समझे यह बात।।4।।



सुरेशचन्द्र जोशी, उत्तराखंड,
पिथौरागढ़